 ISSN: 2349-1876 (Print) | ISSN : 2454-1826 (Online)

भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन एवं बाल गंगाधर तिलक का राजनीतिक दर्शन

डॉ0 ज्योत्स्ना गौतम,

एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ, उ0प्र0

शोध सारांश

बालगंगाधर तिलक एक अदम्य साहसी, कर्मयोगी, महान राष्ट्रवादी राजनीतिक चिन्तक थे। भारत में राष्ट्रवादी भावना उत्पन्न करने में उनका अभूतपूर्व योगदान रहा। वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सक्रिय सदस्य रहे, उन्होने कांग्रेस की विचारधारा को उदारवाद से उग्रवाद में परिवर्तित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। तिलक द्वारा स्वराज की मॉग को "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, मै इसे लेकर रहूगा" के उदघोष के साथ भारतीय जनता के समक्ष रख, जन मानस के राजनीतिक विवेक को झंकृत करने का प्रयत्न किया। तिलक एक यथार्थवादी व्यवहारिक चिन्तक थे, जिन्होने समयनुकूल अपने विचारो का सम्प्रेषण किया। स्वराज प्राप्ति के लिए उनके द्वारा बताये गये साधन स्वदेशी, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा, निष्क्रिय प्रतिरोध ने भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन को एक नई दिशा दी, जिसका अनुगमन कर गॉधी जी द्वारा आगामी आन्दोलनो का संचालन कर ब्रिटिश सरकार को भारत को स्वतन्त्रता प्रदान करने के लिए विवश किया। गांधी जी द्वारा तिलक को आधुनिक भारत का निर्माता कहा गया।

मुख्य शब्द– *तिलक, राष्ट्रवाद, उत्सव, स्वराज्य, ब्रिटिश, स्वतन्त्रता, शासन।*

आधुनिक भारत के महानतम कर्मयोगी, अदम्य साहसी, असीम उर्जावान, कट्टर सनातनी बालगंगाधर का जन्म 23 जुलाई 1856 को महाराष्ट्र के रत्नगिरि स्थान पर एक मराठा ब्राहमण परिवार में हुआ था, इन्होने उच्च शिक्षा डेकन कालेज पूना से प्राप्त की तथा 1880 मे पूना में न्यू इंग्लिश स्कूल की स्थापना में सहयोग कर सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में केसरी एवं मराठा नामक साप्ताहिक पत्रिकाओ के प्रकाशन में केन्द्रीय भूमिका का निर्वाह किया। तिलक 1884 मे डेकन एजुकेशन सोसायटी तथा फरग्यूसन कालेज पूना की स्थापना से भी सम्बन्धित रहे। 1888–89 में तिलक ने शराबबन्दी, नमक कर विरोध, ऋफोर्ड भ्रष्टाचार का पटाक्षेप करने का कार्य किया। 1889 मे पूना की सार्वजनिक सभा द्वारा काग्रेस के प्रतिनिधि के रूप मे इनका चयन किया गया। 1891 में तिलक ने सरकार द्वारा प्रस्तावित विवाह आयु विधेयक को जनता के सामाजिक अधिकारों में हस्तक्षेप मानकर इसका विरोध किया। 1883 में इन्होने जनता की गरीबी की ओर शासन का ध्यान आकर्षित किया, तथा शासन की भूमि सम्बन्धी नीतियों की आलोचना कर, स्थायी भूमि व्यवस्था की मॉग प्रस्तुत की। बम्बई तथा पूना में साम्प्रदायिक दंगो से निपटने में शासन की शिथिलता को देखकर तिलक ने ग्रीक इतिहास एवं ओलम्पिक खेलो के विचार से प्रेरणा लेकर हिन्दुओं को गणपति उत्सव एवं शिवाजी जयन्ती के माध्यम से संगठित करना आरम्भ किया। तिलक प्रथम राष्ट्रीवादी नेता थे जिन्होने जनता से निकटता स्थापित करने का प्रयास किया, इसीलिए ये गॉधी जी के अंग्रज भी कहे जाते है। 1877 में अकाल के समय तिलक महाराष्ट्र की जनता की सेवा में संलग्न रहे तथा विद्यार्थियों को

भी पीडितो की सेवा के लिए प्रेरित किया, साथ ही लगान की वसूली के सम्बन्ध में सरकारी आदेश का उल्लंघन करने के लिए किसानो को प्रेरणा दी। 1896 में बम्बई तथा पूना में प्लेग महामारी की रोकथाम के लिए किये गये सरकारी प्रयासों की गति में शिथिलता सें क्रोधित होकर इन्होने केसरी मे लेख लिख कर सरकार की आलोचना की। प्रशासन द्वारा पुलिस अधिकारी रेंड की हत्या में तिलक की संलिप्तता के आरोप में इन्हे बन्दी बनाकर हिंसा और राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया, उन्हे 18 माह का कठोर कारावास का दण्ड मिला। कारावास से मुक्त होकर तिलक पुनः सार्वजनिक जीवन में सक्रिय हुए एवं 1905 में स्वदेशी एवं राष्ट्रीय शिक्षा के प्रचार में सक्रिय भूमिका निर्वाहित की। 1905 में कांग्रेस के बनारस अधिवेशन में बंग भंग के प्रश्न को लेकर कांग्रेस में हुए मतभेद तथा 1907 में हुए कांग्रेस के सूरत विच्छेद के पश्चात तिलक कांग्रेस से विलग हो गये।

तिलक द्वारा नशाबन्दी अभियान के अन्तर्गत सरकार की आबकारी नीति के विरोध में शराब की दुकानों पर हो रहे धरने–प्रदर्शनो को प्रोत्साहित करने का कार्य भी किया गया, उन्हे प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस के समर्थन में लेख लिखने के लिए 1908 से 1917 तक काले पानी का दण्ड मिलने के कारण माण्डले जेल भेज दिया गया, जहॉ उन्होने मराठी भाषा में 900 पृष्ठो की गीता पर टीका लिखी जो गीता रहस्य के नाम से विख्यात हुई। इन्होने एक सुधारवादी के समान गीता में कार्म ही धर्म को जनता का धर्म बताया। 1914 में जेल से मुक्त होने के पश्चात तिलक पुनः राजनीति में सक्रिय हुए। तिलक की 1916 में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में सहभागिता एवं प्रयासो का ही परिणाम था कि कांग्रेस और मुस्लिम लीग का अधिवेशन एक मंच पर सम्पन्न हो सका, फलस्वरूप लखनऊ समझौता में कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग स्वराज्य की मॉग को प्रस्तुत करने में सफल रहे। सन 1918 में तिलक को सभी की सहमति से कांग्रेस का अध्यक्ष चुना गया, किन्तु शिरोल केस के सम्बन्ध मे उनके इंग्लैण्ड जाने के कारण वे इस गौरवशाली पद को स्वीकार नही कर सके। अगस्त 1920 को मुम्बई में इनका देहावसान हो गया। तिलक ने सर्वप्रथम स्वराज्य की मॉग स्पष्ट रूप से करते हुए कहा कि स्वराज मेंरा जन्म सिद्ध अधिकार है, और मै इसे लेकर रहूँगा, इस नारे ने भारतीयों में स्वराज्य एवं राजनीतिक विवेक जाग्रत करने में महत्वपूर्ण भमिका निभायी। तिलक मे सेवा और बलिदान की भावना तथा सत्ता को चुनौती देने का अदम्य साहस था, कांग्रेस को सरकार की प्रशंसात्मक संस्था से आलोचक संस्था के रूप मे परिवर्तित करने में उनकी महती भूमिका रही। गॉधी जी द्वारा इन्हे आधुनिक भारत का निर्माता कहा जाना तथा सर वैलेन्टाइन चिरोल द्वारा इन्हे "भारत में अशान्ति का जन्मदाता" कहना भारतीय समाज और स्वतन्त्रता आन्दोलन में तिलक के योगदान को दर्शाता है। "द ओरिओन", "द आर्कटिक होम द वेदाज", "श्रीमद भगवद गीता रहस्य", वैदिक क्रोनोलॉजी एन्ड वेदांग ज्योतिष" तिलक द्वारा रचित प्रसिद्ध ग्रन्थ है।

सन 1889 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण करने के उपरान्त तिलक प्रारम्भ में उदारवादी विचार धारा के समर्थक थें, किन्तु ब्रिटिश शासन के राष्ट्रविराधी क्रियाकलापो तथा उनके स्वयं के राष्ट्रवादी विचारों ने उन्हे हमेशा के लिए उदारवादियों से पृथक कर दिया। तिलक उग्रवादी होते हुए भी हिंसा के विरोधी थें, ये उदारवादी साधनों और विचारों में विश्वास नही करते थे, उनका ब्रिटिश शासन के प्रति कटु दृष्टिकोण था। राजनीतिक दर्शन में तिलक की भूमिका एक यर्थार्थवादी विचारक के रूप मे रही, ये भारतीय राजनीति को नवीन दर्शन देने, कांग्रेस को जनमानस के समीप लाने, तथा जनता और नेताओ के समक्ष रचनात्मक कार्यक्रम विकसित

कर उन्हे प्रस्तुत करने मे प्रभावी रूप से सक्रिय रहे। तिलक द्वारा राजनीति में भ्रष्टाचार का विरोध किया गया, इनकी प्रमुख तत्व शास्त्रीय मान्यताओं का प्रभाव इनके दृष्टिकोण में दृष्टव्य है, इनका दृष्टिकोण आध्यात्मिक होने के कारण, इन्होने स्वराज की नैतिक और आध्यात्मिक व्याख्या प्रस्तुत की, तिलक का राष्ट्रवाद का दर्शन आत्मा की सर्वोच्चता के वेदान्तिक आदर्श और पाश्चात्य राजनीतिक चिन्तकों की धारणाओं का समन्वित रूप था। तिलक के राजनीतिक विचार एंव दृष्टिकोण में पूर्वात्य तथा आधुनिक पाश्चात्य राष्ट्रवादी एवं लोकतान्त्रिक विचारों का अद्भुद समन्वय एवं सामजस्य दृष्टिगोचर होता है।

तिलक का राष्ट्रवाद अंशतः पुनरूथानवादी और पुनः संरचनावादी था। वह राष्ट्र में आध्यात्मिक शक्ति एवं नैतिक उत्साह उत्पन्न करने के लिए वेदों और गीता के संदेशों से जनता को अवगत कराना चाहते थें, उन्होने भारतीयो को प्राचीन परम्पराओं के महत्व को दर्शातें हुए, स्वराज्य को राष्ट्रवाद की प्राप्ति का साधन बताकर मार्गदर्शित किया। तिलक ने कहा कि भारतीय वेदो और गीता के महान संदेशो से नई उर्जा और स्फूर्ति को ग्रहित करके ही राष्ट्र उस आध्यात्मिक शक्ति के बल पर ब्रिटिश सत्ता से संघर्ष करके स्वराज्य स्थापित करने में सफल हो सकता है। तिलक का विचार था कि बिना प्राचीन सांस्कृतिक पुर्नजागरण के भारत में सच्ची राष्ट्रीयता उत्पन्न करना सम्भव नही है। तिलक राष्ट्रवाद को एक आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक धारणा मानते थे, इस विषय में उन्होने कहा कि प्राचीनकाल में प्रारम्भिक जातियों के हृदय में कबीले के प्रति जो लगाव था उसी का नवीन संस्करण राष्ट्रवाद है। तिलक ने हिन्दुओ में सामजस्य और एकता की भावना के संचार, निर्भयता, शिवाजी की स्मृतियो का पुनःस्मरण कर लोगो में शक्ति का संचार करने तथा देश की धार्मिक ऐतिहासिक परम्पराओ एवं आदेशो को राष्ट्रीय आन्दोलन में निष्ठ करने के उद्देश्य से राष्ट्रवाद के विकास मे सार्वजनिक उत्सवों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया, इन्ही उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उन्होने शिवाजी और गणपति उत्सवों को प्रोत्साहित किया। गणपति उत्सव द्वारा उन्होने धार्मिक उत्सव को सामाजिक एवं राजनीतिक स्वरूप प्रदान कर, शिवाजी उत्सव द्वारा राष्ट्रीय भावनाओ का संचार कर लोगो को संगठित एवं सक्रिय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। तिलक का विचार था कि उत्सव प्रतीकात्मक होते है, जिनसे राष्ट्रवाद की भावना उत्पन्न होती है, राष्ट्रीय उत्सव एवं प्रतीक देशवासियों की भावना, संवेगों को उल्लेखित कर उनके राष्ट्रवादी भावो को जाग्रत रखते है। तिलक राष्ट्रवाद को अदृश्य वस्तु मानते थे, उनके अनुसार राष्ट्रवाद एक भावना, एक आदर्श है। इस भावना को जाग्रत रखने में महापुरूषों की ऐतिहासिक स्मृतियों की महती भूमिका रही है। तिलक व्यक्तिगत रूप से हिन्दू धर्म और हिन्दू गौरव का ह्रास होते हुए नही देखना चाहते थें, प्राचीन उत्सवों को आधुनिक राष्ट्रीय आवश्यकता के अनुकूल बनाना तिलक के राजनीतिक नेतृत्व एवं प्रतिभा का परिचायक है।

स्वराज्य का विचार तिलक के राजनीतिक नेतृत्व दर्शन का केन्द्रीय तत्व था। सन 1916 मे उन्होन भारतीयो को यह संदेश दिया कि ”स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है” । स्वराज अपने शास्त्रीय अर्थ में एक वैदिक शब्द है, तिलक ने इसे हिन्दू धर्मशास्त्रों एवं शिवाजी के जीवन से ग्रहित किया है, वे स्वराज्य का नैतिक आधार पर समर्थन करते थे, तिलक के अनुसार राष्ट्र की प्रगति का मूल स्वराज्य मे निहित है, इसके अभाव में भारत का चतुर्मुखी विकास सम्भव नही है। तिलक स्वराज्य की धारणा को प्राकृतिक सिद्धान्तो पर आधारित मानते थे, उन्होने माना कि स्वराज्य व्यक्ति का प्राकृतिक अधिकार है, इसलिए भारतीयो का सर्वोपरि कर्त्तव्य है कि वे स्वराज्य प्राप्ति के लिए निरन्तर ब्रिटिश सरकार से संघर्षरत रहे। तिलक ने एनीबेसेन्ट के साथ

मिलकर सन 1916 मे स्वराज्य आन्दोलन आरम्भ किया, तिलक का स्वराज का विचार गीता के स्वर्धम के विचार पर आधारित है, उन्होने तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार स्वराज्य की व्याख्या की। तिलक की होमरूल लीग ब्रिटिश सत्ता के अन्तर्गत स्वराज्य प्राप्त करना चाहती थी, तथा होमरूल उनका तात्कालिक राजनीतिक लक्ष्य था क्योकि पूर्ण स्वाधीनता का विचार उस समय की परिस्थितयों में उन्हे अनुकूल नही लगा। तिलक की कल्पना थी कि स्वराज्य के अन्तर्गत देश का राजनीतिक ढॉचा संघात्मक होगा। लोकतान्त्रिक स्वराज्य के समर्थक होने के कारण वे तत्कालीन सम्पूर्ण शासन व्यवस्था में परिवर्तन करना चाहते थे, सत्ता का जनता के हाथो मे होना ही उनकी दृष्टि में स्वराज्य था। उनके अन्तिम शब्द थे, ''यदि स्वराज्य नही मिला तो भारत संमृद्ध नही हो सकता, स्वराज्य हमारे अस्तित्व के लिए आवश्यक है।'' स्वराज्य प्राप्ति के साधन से रूप में तिलक ने स्वदेशी, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा, निष्क्रिय प्रतिरोध के महत्व पर बल दिया।

सन 1897 में तिलक ने केसरी में प्रकाशित लेखो में ब्रिटिश सरकार की नीतियों के कारण भारत के उद्योग धन्धो और हस्तकला के ह्रास का उल्लेख किया, उधोग धन्धो और हस्तकला मे ह्रास के कारण लोगो की विवशता ने उन्हे कृषि पर आश्रित कर दिया, परिणाम स्वरूप भारत में गरीबी में वृद्धि होती गयी, जिसके निराकरण के लिए तिलक ने स्वदेशी उद्योग धन्धो तथा परम्परागत व्यवसायों के पुनरूद्धार को आवश्यक बताया, किन्तु यह तभी सम्भव था जब इंग्लैण्ड से आयात माल पर चुंगी शुल्क लगाकर भारतीय उद्योग धन्धों को संरक्षित किया जाता, किन्तु ब्रिटिश सरकार के शासन में यह सम्भव नही था कि सरकार भारत में स्वदेशी उद्योग धन्धों को प्रोत्साहन देती। तिलक स्वदेशी वस्तुओ के प्रयोंग से भारत को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाना चाहते थे, इसीलिए उन्होने स्वदेशी वस्तुओ के उपयोग पर बल दिया। स्वदेशी को राज्यभक्ति से जोडने में उनकी प्रमुख भूमिका रही।

बहिष्कार तिलक का एक नवीन राजनीतिक शस्त्र था, जिसका तात्पर्य ब्रिटेन में बने उत्पाद को खरीदने से इंकार करना था। आरम्भ में बहिष्कार का प्रयोग ब्रिटिश व्यापार को भारत के साथ–साथ दूसरे देशो को भी आर्थिक दबाव में लाने के लिए एकमात्र साधन के रूप में प्रयुक्त किया गया। जनवरी 1907 मे इलाहाबाद में एक भाषण देते हुए तिलक ने विदेशी वस्तुओ के बहिष्कार के कार्यक्रम पर अत्यधिक बल दिया। बहिष्कार स्वदेशी का पूरक था, इस सम्बन्ध में तिलक ने कहा ''जब आप स्वदेशी को प्राथमिकता देते है तो आपको विदेशी का बहिष्कार करना ही होगा बिना बहिष्कार के स्वदेशी की प्रगति व विकास सम्भव ही नही है।'' भारत में ब्रिटिश वस्तुओ के सम्बन्ध में तिलक ने बहिष्कार की नीति का प्रबल समर्थन इसलिए भी किया, क्योकि ब्रिटेन के आर्थिक हित बुरी तरह क्षतिग्रस्त होगे और वे भारत को स्वराज्य देने को बाध्य हो जायेगे।

तिलक छात्रावस्था से ही राज्य की उन्नति और उत्थान में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका से परिचित थें, वे पाश्चात्य शिक्षा को भारत के कल्याण व सुन्दर भविष्य के लिए उपयोगी नही समझतें थे, किन्तु तिलक अग्रेजी शिक्षा के इस दृष्टि से समर्थक थे कि स्वतन्त्रता, समानता, लोकतन्त्र और राष्ट्रीयता के विचार अग्रेजी शिक्षा के माध्यम से मिलते है, जिससे देशवासियों में स्वतन्त्रता के प्रति प्रेम की भावना का जन्म होता है। तिलक ने तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था की त्रुटिया यथा धार्मिक शिक्षा का अभाव, जिसे तिलक चारित्रिक निर्माण के लिए आवश्यक समझते थें, दूसरें वैदिक और उपनिषद कालीन शिक्षा के गौरवपूर्ण आदर्शो का विस्मरण था, की ओर ध्यान आकृष्ट किया, जिसके कारण देश का अधपतन हो चुका था, इसीलिए तिलक ने राष्ट्रीय

स्कूल, कालेज की स्थापना पर बल दिया, उन्होने सन् 1880 में पूना में न्यू इंग्लिश स्कूल तथा 1908 मे शिवाजी के गुरू श्री समर्थ रामदास के नाम पर समर्थ विद्यालय की स्थापना की। तिलक की दृष्टि में तत्कालीन शिक्षा का उद्देश्य नौकरी, पैसा, भौतिक समृद्धि की प्राप्ति से प्रेरित था किन्तु उनका मानना था कि मातृभूमि की उन्नति एवं पुनरोत्थान के लिए शिक्षक त्याग, तपस्या, आदर्शवाद आदि के प्राचीन भारतीय आदर्शो से अनुप्राणित होकर छात्रो को शिक्षित करे, जिससे कि वे स्वतन्त्रता संग्राम मे अपनी यथोचित भूमिका का निर्वाह कर सके, उन्होने सर्वसुलभ शिक्षा पर बल दिया। इस प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा बीसवी शताब्दी के राष्ट्रवादियों के कार्यक्रम का अभिन्न अंग बन गयी।

तिलक निष्क्रिय प्रतिरोध या असहयोग को स्वराज्य प्राप्ति का एक विशिष्ट शस्त्र मानते थें। अपने नवीन दल के सिद्धान्तों पर जनवरी 1907 को भाषण देते हुए उन्होने कहा कि ब्रिटिश सरकार भारतीयों के सहयोग और असहमति से ही भारत पर शासन कर रही है, यदि हम सरकार को यह सहयोग देना बन्द कर दे तो वह क्षण मात्र के लिए भी कार्य नही कर सकती, इस प्रकार सरकार का प्रतिरोध करना और उसके कानून को स्वीकार ना करना निष्क्रिय प्रतिरोध है। तिलक के मतानुसार निष्क्रिय प्रतिरोध सशस्त्र प्रतिरोध से भिन्न था और तत्कालीन समय में भारतीयो के शीघ्र स्वराज्य की प्राप्ति का साधन था। तिलक के अनुसार स्वराज्य प्राप्ति का साधन सरकार को शासन कार्य में सहयोग न देना तो था ही किन्तु वे विशेष परिस्थितियों में सरकार के कानूनों की अवहेलना को न्याय संगत मानतें थे, उन्होने कहा ”जो कानून, न्याय और नैतिकता के प्रतिकूल है, उनका पालन न करने का जनता को अधिकार है, उन्हे किसी कानून के लाभो और हानियों की तुलना करके देखना चाहिए, यदि हानियो का पलड़ा भारी है तो उन्हे इस आधार पर कानून का विरोध करना चाहिए, कि मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह कृत्रिम और अन्यायपूर्ण कानूनो का विरोध करे। निष्क्रिय प्रतिरोध की पद्धति व्यक्ति के इस संकल्प का प्रतीक है कि वह किसी भी प्रकार का बलिदान करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयत्न करें। तिलक ने संवैधानिक साधनो के माध्यम से निष्क्रिय प्रतिरोध का समर्थन किया, वे किसी कानून के वैध और संवैधनिक रूप में भेद करते थे, उनके अनुसार सरकार द्वारा निर्मित कानून की वैधता होने के पश्चात भी यह आवश्यक नही है कि वह संविधान के भी अनुकूल हो, किसी कानून की वैधानिकता के लिए उसका न्याय, नैतिकता और लोकमत की भावनाओं के समीप होना आवश्यक है। ब्रिटिश सरकार द्वारा आन्दोलनो को दबाने के लिए बनाये गये कानून वैध तो थे किन्तु जनमत के विरूद्ध होने के कारण उन्हे वैधानिक नही कहा जा सकता। तिलक ने शिवाजी द्वारा अफजल खान की हत्या को न्यायोचित बतातें हुए सकारात्मक प्रतिरोध के सम्बन्ध में कहा कि ”सकारात्मक भावनाओ के साथ दूसरों की भलाई के लिए उन्होने (शिवाजी) अफजल खान की हत्या की, यदि हमारे घर में चोर घुस आये और हमारे हाथो में उन्हे बाहर भगाने की शक्ति न हो तो हमें बेहिचक उसे कमरे में बंद करके जिंदा जला देना चाहिए। इस प्रकार उपरोक्त साधनो से तिलक स्वराज्य प्राप्त करना चाहते थे।

तिलक के राजनीतिक विचारो में स्वराज्य की प्राप्ति के लिए हिंसक एवं अहिंसक साधनो की प्रयुक्ति के मध्य असंमजस प्रतीत होता है। प्रारम्भ में उन्होने अपनी लेखनी के माध्यम से लक्ष्य प्राप्ति के लिए सभी प्रकार के साधनो को अपनाने पर बल दिया, महाराष्ट्र में हुई कुछ उग्र गतिविधियों के लिए उनके लेखन को ही उत्प्रेरक माना जाता है, लेकिन बाद में उन्होने हिंसा के मार्ग को छोड़कर केवल निष्क्रिय प्रतिरोध को ही स्वराज्य प्राप्ति का साधन बताया, उन्हे भारत की जनता की भीरूता तथा सशस्त्र विद्रोह की अक्षमता के कारण यह विचार व्यक्त करना पड़ा

कि भारत मे रूस की तरह क्रान्ति तथा बम का सफल प्रयोग करने का समय आया नही था, किन्तु आने वाला था। हिंसक क्रान्ति की योजना को उनके द्वारा देशनिर्वासन (1908) के समय त्याग दिया गया, एवं अहिसक असहयोग के मार्ग को अपनाकर, कांग्रेस लोकतान्त्रिक दल की स्थापना की। इस प्रकार उनकी विचार धारा सशस्त्र क्रान्ति के स्थान पर संवैधानिक क्रान्ति के रूप में परिवर्तित हुई।

बेन्थम के राज्य की प्रकृति के उद्देश्य उपयोगितावाद का तिलक द्वारा समर्थन नही किया गया। वे सुखवाद के संख्यात्मक आधार "अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख को उचित नही मानते थे, नैतिकता सम्बन्धी प्रश्नों का संख्यात्मक निर्णय त्रुतिपूर्ण है (डी. एस. जौल, रीजन एण्ड रिबेलियन, प्रेटिस हाल न्यूयार्क, 1963 पृष्ठ 253) प्रथम दृष्टया या जन साधारण को जो वस्तु अधिक सुख उत्पन्न करने वाली प्रतीत होती है, उसे दूरदर्शी हानि प्रद बताते है। उनके अनुसार अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख का सिद्धानत एक यान्त्रिक सिद्धानत है, जो नैतिकता के विरूद्ध है, नैतिक प्रश्नों का समाधान भौतिक समाधान से सम्भव नही है। उनके अनुसार उच्च कार्यो तथा सद्विवेक एवं मस्तिष्क जन्य उपलब्धियो से मानव कल्याण एवं सुख की प्राप्ति सर्वश्रेष्ठ है। इन्द्रियजन्य सुख निम्न कोटि का सुख है (बालगंगा धर तिलक, श्रीमदभगवदगीता रहस्य अर्थात कर्मयोग शास्त्र, तिलक ब्रदर्स पूना 1935 खण्ड एक पृष्ठ 114 से 128)।

तिलक ने राजनीतिक यथार्थवाद का आश्रय लेकर पेरिस में शन्ति सम्मेलन (1919) के अध्यक्ष क्लीमेंशो को स्मरण पत्र प्रेषित करते हुए भारत की भावी अर्न्तराष्ट्रीय महत्ता का दृश्य उनके समक्ष प्रस्तुत किया, जिससे सम्पूर्ण विश्व की शान्ति के लिए भारत को आन्तरिक स्वशासन प्राप्ति, बिना सहमति के दूसरे राज्य पर शासन का विरोध, राष्ट्र संध में भारत के अन्य ब्रिटिश अधिराज्य के समकक्ष प्रतिनिधित्व, भारत में लोकतान्त्रिक जन प्रतिनिधि शासन की स्थापना हेतु भारत को आत्मनिर्णय के अधिकार की घोषणा जैसे प्रमुख विषय सम्मिलित थे। तिलक का उद्देश्य भारतीय केन्द्रीय सरकार की रक्षा, वैदेशिक तथा सैन्य विभाग तक सीमित रखना, तथा प्रान्तो में द्वैध शासन के स्थान पर पूर्ण स्वशासन एवं केन्द्र में संसदीय शासन की स्थापना था।

तिलक के राजनीतिक विचार व्यवहारिक एवं समयानुकूल थे। परिस्थिति अनुकूल उन्होने उपनी स्वशासन की घारणा को ब्रिटिश शासन के प्रति असहयोग में परिवर्तित किया। कांग्रेस डेमोक्रेटिक पार्टी जिसकी स्थापना उन्होने माण्टफोर्ड सुधारो को क्रियान्वित करने के लिए की थी उसके चुनाव घोषणा पत्र (सन 1920) में वर्णित विषय उनके परिपक्व राजनीतिक चिन्तन की पुष्टि करते है। तिलक ने घोषणा पत्र में काग्रेस और लोकतन्त्र के प्रति अगाध विश्वास व्यक्त करते हुए उद्देश्य प्राप्ति के लिए लोकतान्त्रिक साधनों की उपयुक्तता को स्वीकार कर शिक्षा तथा राजनीतिक मताधिकारी को इसका प्रमुख शस्त्र माना। तिलक सामाजिक अयोग्यता को दूर करने के पक्ष में थे, वे धार्मिक सहिष्णुता, धर्म की पवित्रता, राज्य द्वारा वाह्य आक्रान्ता से सुरक्षित करने के अधिकार एवं दायित्व में विश्वास करते थें। तिलक ने घोषणा पत्र में सामाजिक एवं आर्थिक सिद्धान्तों के अन्तर्गत, समुचित मजदूरी नियत कार्य के घन्टे और पूजीपतियों तथा मजदूरो के मध्य न्यायसंगत समन्वय किये जाने का भी उल्लेख किया, इनके द्वारा रेलमार्गो के राष्ट्रीयकरण, भाषा के आधार पर प्रान्तो की पुर्नसंरचना, मातृभाषा में शिक्षा, ग्राम पंचायतो की शक्ति में वृद्धि, मद्यनिषेध, सार्वभौमिक मताधिकार का विस्तार, प्रान्तीय कार्यक्रम के अन्तर्गत सम्मिलित किया। स्वतन्त्रता के उपरान्त कांग्रेस ने तिलक की उपयोगी योजना के अधिकतम विषयों

को संविधान द्वारा एवं अन्य शासकीय उपबन्धों के माध्यम से क्रियान्वित किया।

तिलक के राजनीतिक विचारों के विश्लेषण उपरान्त निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि तिलक के विचारो और कार्यो द्वारा राष्ट्रीय पुर्नजागरण और राष्ट्रीय आन्दोलन को एक नवीन मार्ग, नवीन ऊर्जा, नवीन चेतना, का संचरण प्राप्त हुआ। उन्होने कांग्रेस को अभिजात्य वर्ग के दल से जनसाधारण का दल बनाने एवं कांग्रेस की याचना पद्धति एवं प्रार्थनावादी आन्दोलन को उग्रवादी, निर्भीक, जनआन्दोलन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। स्वराज्य के सैद्धान्तिक विचार को उन्होने सनातन धर्म से संयुक्त कर जनप्रिय बना प्रसिद्धि प्रदान की। अपने वैचारिक कार्यक्रम स्वराज, स्वदेशी, स्वधर्म, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा द्वारा ब्रिटिश सरकार को कंपित कर देश को अवज्ञा का दर्शन प्रदान कर गॉधी जी के आगामी आन्दोलनो के लिए धरातल तैयार कर दिया। देश को देशभक्ति का संदेश देकर उन्होने निष्क्रिय प्रतिरोध को एक संवैधानिक आन्दोलन का स्वरूप प्रदान किया। तिलक भारत में आधुनिक लोकतन्त्र के प्रणेता है, उन्होने स्वयं को किसी आदर्शवादी दर्शन तक सीमित नही रखा, अपितु अपने दर्शन में यथार्थवादी एवं समयनुरूप विचारों को अपनाया। वह आधुनिक भारत के राष्ट्रनिर्माता है यह कहना अतिश्योक्ति नही होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अवस्थी डा. ए., अवस्थी डा. आर. के., आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तक, रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2002.
2. गाबा ओ. पी., भारतीय राजनीतिक विचारक, मयूर पेपर बैक्स, नोयडा, 2017.
3. ग्रोवर बी. एल., यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहासः एक नवीन मूल्यांकन, एस. चन्द एण्ड कम्पनी (प्रा.लि.), नई दिल्ली, 1988.
4. नागर डा. पुरूषोत्तम, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1989.
5. वर्मा डा. दीनानाथ, आधुनिक भारत का इतिहास, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009
6. वर्मा डा. वी. पी. आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, 2010–11